वृत्तपत्राचे नांव :– हिंन्दी मिलाप
वृत्तपत्र प्रकाशनाचे ठिकाण :– हैद्राबाद
वृत्तपत्र पान क :– 7
दिनांक :–11/08/2007

# वैदिक संस्कृति है भारत की शक्ति

भारत के लिए उसकी वेद-विद्या, उसकी दैवी-शक्ति विधा ही जनमानस को जागृत करने के लिए वरदान स्वरूप है। भारतीय संस्कृति, जो ज्ञान का दीपक है, उससे सारे विश्व को प्रकाशित किया जा सकता है। यह अद्भुत दीपक केवल भारत के ही पास है। जब वैयक्तिक चेतना जागृत हो जाती है, तो वह ब्राह्मी से संचालित होने लगती है और यही भारत का असली ज्ञान है। अपने हाथ में सर्वज्ञता और सर्वसमर्थता की जो कुंजी है, वह वेद ही है। भारतीय संस्कृति श्रुति में है, स्मृति में है, पुराण में है, वह सनातन है। और वेद का यह सनातन धर्म किसी का बनाया हुआ नहीं है। वह तो हमेशा से ही है। अपने ऋषियों-महर्षियों ने प्राकृतिक सत्ता को जगाने के नियम-विधान बताये हैं। इन नियमों पर भारतीय लोग परम्परा से चलते आ रहे हैं। भारत के पास ज्ञान का उजाला है। इस उजाले से भारतीय अपने-अपने घर को प्रकाशित करते ही हैं और विश्व में भी ज्ञान का उजाला फैलाते हैं।

भारत की दैवी शक्ति ध्यान-योग, यज्ञानुष्ठानों से जगती है। बिना यज्ञ से, बिना ग्रहशांति से कुछ नहीं होता है। वैदिक तकनीकों से प्रकृति साम्यता जागती है। रजोगुणी, तमोगुणी, सतोगुणी प्रभाव में साम्यता आती है। भारतीय इसी स्तर पर योग, भक्ति और कर्म करते हैं। बहुत से लोग इस विधा को नहीं मानते। ऐसे लोगों को अज्ञानी समझना चाहिए। उन्हें नहीं पता कि मनुष्य जब अपने में जागता है, तो वह सबसे अधिक शक्तिशाली होता है। आनन्द कहां है, जहां सारे देवी-देवता होते हैं। इसके लिए आवश्यक है कि हम वेद-विज्ञान और वैदिक तकनीकों से जुड़े रहें। ध्यान, योग, ज्योतिष पंचांग के अनुसार ग्रहशांति अनुष्ठान, वास्तुशांति अनुष्ठान, यज्ञानुष्ठान, त्योहार, पर्व, उत्सव में साधना, भक्ति, अनुष्ठान, दैवी आराधना आदि भारतीय लोकजीवन में चली आ रही वैदिक तकनीकें ही हैं, जो हमें ब्राह्मी चेतना से जोड़े रखती हैं। भावातीत ध्यान योग की सबसे सुगम वैदिक तकनीक है।

– महर्षि महेश योगी

*लेकिन अब आधुनिक विज्ञान शोधों द्वारा इस विधा को विज्ञान सिद्ध कर रहा है तो लोगों को समझ आ रहा है। आज भारतीय वेद-विद्या के प्रति लोगों का रुझान और विश्वास बढ़ रहा है और लोग धीरे-धीरे उसे पुन: अपना रहे हैं।*

भावातीत ध्यान के अभ्यास से हम चेतना के सर्वोच्च स्तर से जुड़े रहते हैं। भावातीत ध्यान का यह अभ्यास 'आनन्दमयो' है। भावातीत ध्यान के अभ्यास में 'आनन्द' की जो वर्षा होती है, उससे व्यक्ति-जीवन का हर पक्ष खिल उठता है। जीवन आनन्दमयी गुणों में परिणत हो जाता है। इसलिए यह आवश्यक है कि अपने भीतर देवी-देवताओं की शक्ति जगाने के लिए, आनन्दमयी बनाने के लिए वैदिक तकनीकों को अपनाये रखें, जुड़े रहें। मनुष्य अपने भीतर इनकी शक्तियों को जगा लेता है, तो वह सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान होता है। यह भारत का असली ज्ञान है। विदेशी प्रशासकों ने अपने प्रशासन में इसे मिथक कह कर प्रचारित किया है। अंग्रेजी पढ़ाई और संस्कृति के प्रभाव में बहुत से भारतीय भी इस विद्या को मिथक मानने लगे। लेकिन अब आधुनिक विज्ञान शोधों द्वारा इस विधा को विज्ञान सिद्ध कर रहा है तो लोगों को समझ आ रहा है। आज भारतीय वेद-विद्या के प्रति लोगों का रुझान और विश्वास बढ़ रहा है और लोग धीरे-धीरे उसे पुन: अपना रहे हैं।